दर्शनशास्त्र का इतिहास
56 जर्मन आदर्शवाद
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

अब हम अपना ध्यान जर्मन आइडियलिज़्म की ओर मोड़ना चाहते हैं और मॉडर्न सोच के पूरे स्ट्रक्चर को ध्यान में रखना चाहते हैं जिसे हमने इन दो मिलती-जुलती लाइनों से दिखाया है। कहने का मतलब है कि हमारे पास डेसकार्टेस, स्पिनोज़ा और लाइबनिज़ द्वारा दिखाए गए कॉन्टिनेंटल रैशनलिज़्म की एक परंपरा है, जो कांट के बाद जर्मन आइडियलिस्ट परंपरा की ओर ले जाती है। और अगर आप सोच रहे हैं कि कनेक्शन का पॉइंट क्या है, तो वह खुद पर ज़ोर देने पर है।

रैशनलिस्ट में, ज़ाहिर है, पहले से मौजूद ज्ञान पर ज़ोर दिया जाता है , यानी खुद के अंदरूनी इंटेलेक्चुअल रिसोर्स पर। खुद की अंदरूनी रैशनैलिटी पर। और फिर जर्मन आइडियलिज़्म के डेवलपमेंट में खुद को और भी ज़्यादा अहमियत मिलती है।

बेशक, हमारे पास ब्रिटिश एम्पिरिसिस्ट परंपरा भी है जिसे लॉक, बर्गली और ह्यूम दिखाते हैं, जो 19वीं सदी के पॉज़िटिविज़्म और एम्पिरिसिज़्म की ओर ले जाती है, जो हमें जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे लोगों में मिलेगी, और फिर 20वीं सदी में बर्ट्रेंड रसेल और लॉजिकल पॉज़िटिविज़्म, वगैरह-वगैरह। यहां से आगे, हम बस इन दो ट्रेंड्स को फॉलो कर रहे हैं। तो हम 20वीं सदी में जीन-पॉल सार्त्र और उसके बाद तक यूरोपियन ट्रेंड को फॉलो करेंगे।

और फिर हम वापस जाएंगे और बेंथम और मिल से लेकर 1950 तक और उसके बाद के अनुभववादी ट्रेंड को फॉलो करेंगे। तो हम इसे उसी तरह बनाएंगे। इस दूसरे डायग्राम की पूरी टाइमलाइन को भी ध्यान में रखें, उम्मीद है अब तक यह काफी जानी-पहचानी हो गई होगी।

इतिहास के दौरान दुनिया को देखने वाली कई परंपराएँ विकसित हुईं। दुनिया को देखने वाली परंपराएँ जिन्हें आप ईश्वरवाद, प्रकृतिवाद, सर्वेश्वरवाद, या ऐसा ही कुछ कह सकते हैं। और उनमें से हर एक पर विज्ञान के इतिहास में विकसित हुए वैज्ञानिक मॉडलों का बहुत ज़्यादा असर पड़ा, और वे उनसे बने।

पहला, बेशक, ग्रीक साइंस, पाइथागोरस या अरिस्टोटेलियन को दिखाता है, जो रूप की ऑब्जेक्टिव रियलिटी, स्पीशीज़ की फिक्सिटी, वगैरह पर ज़ोर देता है, इसलिए यह एक टेलियोलॉजिकल वर्ल्डव्यू है। दूसरा है मैकेनिस्टिक साइंस का टेलियोलॉजी खोना, जो बस मैटर का एक फिक्स्ड मैकेनिकल ऑर्डर और कॉज़-एंड-इफेक्ट मैकेनिज्म है। लेकिन फिर, जैसा कि हमने पिछली बार लगभग 1800 या उससे थोड़ा पहले बताया था, आपको हिस्टोरिकल साइंस और बायोलॉजिकल साइंस का उदय दिखना शुरू होता है, दोनों ही डेवलपमेंट प्रोसेस से जुड़े हैं।

और इसलिए तीसरे तरह का साइंटिफिक मॉडल जो 19वीं और 20वीं सदी के ज़्यादातर हिस्से की पहचान बन गया है, वह मैकेनिस्टिक के बजाय ज़्यादा ऑर्गेनिक है । ऑर्गेनिक का मतलब है आपस में जुड़े हुए रिश्ते। हर चीज़ किसी न किसी ऑर्गेनिक तरीके से हर चीज़ से जुड़ी हुई है ।

और हिस्टोरिकल प्रोसेस के विचार के साथ, डेवलपमेंट का प्रोसेस भी इसमें से होकर गुज़रता है। तो हम इस हफ़्ते और अगले हफ़्ते थोड़ी देर जर्मन आइडियलिज़्म के बारे में बात करेंगे। और फिर 19वीं सदी के कुछ और डेवलपमेंट, फ़्यूअरबाख, मार्क्स का थोड़ा सा टच, इस तरह की चीज़ों पर बात करेंगे ।

प्रोसेस फिलॉसफी में जाएंगे । और मैं अब यह बताना चाहूंगा कि हमने आउटलाइनिंग पूरी कर ली है। लेकिन अगर आपने इसे कांट में किया है, तो आपने सीख लिया है कि इसे कैसे करना है।

आपने फिलॉसफी पढ़ना सीख लिया है। तो, जैसे ही हम व्हाइटहेड पहुँचेंगे और उसके बाद, हम पेपरबैक क्लासिक्स, चुनी हुई पेपरबैक क्लासिक्स पढ़ेंगे। और मैं पूछूँगा, और मैं आपको बाद में और डिटेल्स दूँगा , मैं आउटलाइन के बजाय बुक रिव्यू माँगूँगा।

तो आपको किताब की थीसिस पहचानने का मौका मिलेगा। इस हफ़्ते, आप हेगेल के सिलेक्शन्स के लिए एक थीसिस स्टेटमेंट पर काम कर रहे हैं। हम किताब की थीसिस और उन स्टेप्स पर बात करेंगे जिनसे थीसिस डेवलप हुई है।

और यह भी कि यह डेवलपमेंट फिलोसोफिकल रूप से कितना असरदार है। तो हम बाकी बचे क्वाड के लिए रीडिंग फिलोसोफी को और आगे ले जाएंगे। लेकिन इस फ्रेमवर्क को ध्यान में रखें ताकि आप देख सकें कि चीजें एक अलग रूप लेने वाली हैं ।

अब, हम जो करना चाहते हैं, वह है सबसे पहले जर्मन आइडियलिज़्म की कुछ पूरी जानकारी लेना। यह किस बारे में है? और यह डायग्राम यह दिखाता है कि मैं बस उस हिस्टोरिकल ग्रिड को मिटा रहा हूँ। इससे यह पता चलता है कि जर्मन आइडियलिस्ट मैकेनिस्टिक साइंस की अल्टीमेटनेस को रिजेक्ट कर रहे हैं और उसके खिलाफ रिएक्ट कर रहे हैं।

कहने का मतलब है, वे यह नहीं मानते कि न्यूटन की परंपरा का मैकेनिस्टिक साइंस हमें असलियत का नेचर बताता है। जहां तक नेचर के मैकेनिस्टिक मतलब का सवाल है, उनका नज़रिया एक फेनोमेनलिस्ट होगा। यह असलियत के बारे में नहीं, बल्कि दिखावे के बारे में बात करता है।

असलियत मैकेनिकल होने के बजाय ज़्यादा ऑर्गेनिक है। यह एक स्टैटिक ऑर्डर होने के बजाय ज़्यादा डेवलपमेंटल प्रोसेस है । आप देखेंगे।

एक जैसा क्रम जो कभी नहीं बदलता। नहीं, यह एक डेवलपमेंटल प्रोसेस है जिसमें बदलाव होता है। तो एक बात जो आप ध्यान में रख सकते हैं वह यह है कि 19वीं सदी का आइडियलिज़्म बदलाव का मेटाफ़िज़िक्स होने वाला है।

का मेटाफ़िज़िक्स । और यही वह जड़ है जिससे बाद में 20वीं सदी की प्रोसेस फ़िलॉसफ़ी और प्रोसेस थियोलॉजी निकली। जिसके बारे में आप में से कुछ लोग जानते होंगे।

तो यह मैकेनिस्टिक साइंस के खिलाफ एक रिएक्शन है। अब , मैकेनिस्टिक साइंस के खिलाफ दूसरे रिएक्शन भी हुए हैं जिन्हें हमने पहले ही मान लिया है। मुझे लगता है, तीन तरह के रिएक्शन होते हैं।

एक जो कहता है कि मैकेनिस्टिक नियम के अपवाद होने चाहिए। डेसकार्टेस ने यही नज़रिया अपनाया। मन उन कारणात्मक मैकेनिज्म का अपवाद है जो बाकी सब चीज़ों पर राज करते हैं।

क्योंकि मन के पास अपनी मर्ज़ी होती है। स्कॉटिश रियलिस्ट यही नज़रिया रखते हैं। जॉन लॉक भी यही नज़रिया रखते हैं।

दूसरी बात, मैकेनिस्टिक फिलॉसफी को पूरी तरह से खारिज किया जाता है क्योंकि यह हमें असलियत का नेचर नहीं बताती। लाइबनिज वहीं हैं। लाइबनिज वहीं हैं।

उनकी मोनोडोलॉजी ज़्यादातर एक टेलियोलॉजिकल स्कीम है। और इस मायने में, लाइबनिज़ 19वीं सदी में आगे क्या होने वाला है, इसका एक तरह का अंदाज़ा है। क्योंकि हम इस आइडियलिस्ट मूवमेंट में प्रकृति और इतिहास की टेलियोलॉजिकल तस्वीर के रिन्यूअल को देखते हैं।

यह एंड-ओरिएंटेड, एंड-अचीविंग है। इस प्रोसेस में पोटेंसी असल में आ रही है। फिर आपको बर्कले और कांट जैसे लोगों का फेनोमेनलिस्ट रिएक्शन मिलता है।

यह कहना कि मैकेनिस्टिक साइंस हमें दिखावे के बारे में तो बताता है लेकिन असलियत के बारे में नहीं। तो आपको वे तीन और तरह के रिएक्शन मिलते हैं जिन्हें हम पहले ही मान चुके हैं। खैर, अब आते हैं आइडियलिस्ट।

और यह जो कर रहा है, वह बेशक, साइंस के पहले के फेनोमेनलिस्ट नज़रिए पर सवार है। और खासकर कांट के असर पर। खासकर कांट के असर पर।

सबसे पहले , यह ध्यान में रखें कि यह मैकेनिस्टिक साइंस के खिलाफ रिएक्शन है। दूसरा, यह 17वीं सदी के कट्टर तर्कवादी मेटाफिजिक्स के खिलाफ भी एक रिएक्शन है। जिस तरह का फाउंडेशनलिस्ट तरीका डेसकार्टेस ने अपने पहले प्रिंसिपल्स और उसके बाद डिडक्टिव रीज़निंग से शुरू किया था, वह तब तक चलता रहा जब तक आपने पूरा सिस्टम तैयार नहीं कर लिया।

अब उस तरह का प्रोसेस, उस तरह का मेथड, शायद तब सही होता जब आपको लगता कि यह पूरी तरह से मैथमेटिकल तरीके से ऑर्डर किया गया यूनिवर्स है। एक मैथमेटिकल मेथड जो एक मैथमेटिकल यूनिवर्स में फिट हो। लेकिन अगर आपके पास एक डेवलपमेंटल, ऑर्गेनिक तरह का प्रोसेस है, तो आपको एक अलग तरह के मेथड की ज़रूरत है।

और यहाँ हम देखेंगे कि कांट का ट्रांसेंडेंटल तरीका ही चाबी है। तो हम थोड़ी देर में उस पर वापस आएंगे। एक ट्रांसेंडेंटल तरीका।

तीसरा, ये जर्मन आइडियलिस्ट कांट की कोपरनिकन क्रांति को जारी रखे हुए हैं। और यह तुरंत एक ट्रांसेंडेंटल तरीके के विचार पर निर्भर करता है जो खुद के कंस्ट्रक्टिव योगदान पर फोकस करता है। एक कांट की कोपरनिकन क्रांति।

कहने का मतलब है, असलियत की चाबी, असलियत को समझने की चाबी, खुद की भूमिका है। सब्जेक्टिव खुद की भूमिका, इंसानी आत्मा की। अब मैंने कहा कि कांट आपको रोमैंटिसिज़्म की ओर ले जाता है।

तो, यह रहा। क्रिएटिव सेल्फ का रोल। लेकिन यह अलग-अलग तरीकों से आता है, और आप इसे ऐसे सोच सकते हैं जैसे यहाँ व्यूअर, ऑब्ज़र्वर, थिंकर, जो भी हो, अपनी सेल्फ-कॉन्शसनेस के लेंस से पूरी रियलिटी की स्क्रीन को देख रहा है ।

तो इस नज़रिए से, आप चीज़ों को इंसानी आत्मा की सेल्फ़-कॉन्शसनेस से जो मिलता है, उसके ज़रिए देखते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, अगर हम ट्रांसेंडेंटल तरीके से, इंसानी अनुभव की सभी खास बातों के नीचे, सेल्फ़-कॉन्शसनेस क्या है, सेल्फ़ क्या है, इसका असली सार खोज सकें, तो हम उस रोशनी में, असलियत को देख सकते हैं , जैसे कि, स्क्रीन पर प्रोजेक्ट की गई पूरी असलियत। क्या आपने अंधेरे में परछाईं वाली इमेज बनाने का खेल खेला है? क्या आपने बचपन में अपने बिस्तर में टॉर्च जलाकर ऐसा किया था? आप छत पर लाइट कहाँ डालेंगे और अपनी उंगलियों से कोई अजीब सी आकृति बनाएंगे, और आपको वहाँ एक प्रोजेक्ट की गई बड़ी इमेज मिलेगी? खैर, आप सोच सकते हैं कि हेगेल जो कर रहे हैं वह उस तरह की इमेज बनाना है।

पूरी असलियत पर खुद की इमेज बनाना । अगर आप चाहें, तो खुद की इमेज में यूनिवर्स बनाना। पूरी असलियत को अपनी इमेज में बनाना।

असलियत की चाबी इंसान की अपनी सेल्फ-कॉन्शसनेस है। अब, अगर ऐसा है, तो इसका मतलब यह होगा कि इंसानी कॉन्शसनेस के स्ट्रक्चर असलियत के स्ट्रक्चर भी हैं। या कांटियन भाषा में कहें तो, समझ की कैटेगरी ही असलियत की कैटेगरी हैं।

ओह, आप फेनोमेनल-नॉमिनल का फर्क तोड़ रहे हैं। सही है। आप समझे? अगर सच में कोई प्री-फॉर्मेशन है जिससे खुद का बनना असलियत की इमेज में होता है, तो खुद के स्ट्रक्चर को समझकर, हम असलियत के स्ट्रक्चर को समझ सकते हैं।

और ये लोग ठीक यही करने की कोशिश कर रहे हैं। तो ट्रांसेंडेंटल तरीका खुद को समझने या खुद को जानने की प्रक्रिया को समझाने की एक कोशिश है। ताकि खुद को जानने की क्षमता का विकास, पूरी आत्मा की चेतना के विकास का एक छोटा रूप हो, जो होने की हर चीज़ को शामिल करने वाली ज़मीन है।

और जैसे ही मैं यह कहता हूँ, आप देखना शुरू कर देते हैं कि यह आइडियलिज़्म एक मोनिस्टिक आइडियलिज़्म होने वाला है। होने का एक ही आधार है जो सबको शामिल करता है। जिसका सेल्फ -कॉन्शसनेस बस एक छोटा सा रूप है।

अब, मैं एक और बात कहना चाहता हूँ। इससे मदद मिल सकती है ।

हमने आज के ज़माने में, डेसकार्टेस से लेकर कांट तक, खुद के नेचर के बारे में लगातार सवाल देखा है। मैं क्या हूँ? ओह, एक सोचने वाली चीज़। खैर, लॉक को इस बारे में पक्का नहीं पता।

ह्यूम को सिर्फ़ परसेप्शन का एक बंडल मिलता है, जिसमें उन्हें जोड़ने के लिए कुछ नहीं होता। कांट को लगता है कि अप्पेरेंस की यह सिंथेटिक यूनिटी है, जिससे कॉन्शसनेस के फील्ड का एक तरह का यूनिफिकेशन होता है। और समझ का स्कीमेटाइज़ेशन किसी के पूरे एक्सपीरियंस और सोच का यूनिफिकेशन लाता है।

लेकिन आपने देखा होगा कि यह कोई अंदरूनी चीज़ नहीं है जो एक आत्मा है। यह चेतना की बनावट है जो एक करती है। सही? यह चेतना की बनावट है जो एक करती है।

अब, जर्मन आइडियलिस्ट्स के लिए यही शुरुआती पॉइंट है। वे कार्टेशियन मतलब में किसी माइंड सब्सटेंस, किसी सोल सब्सटेंस की तलाश में नहीं हैं। वे प्लेटोनिक मतलब में अमर आत्माओं की तलाश में नहीं हैं जिनका कोई हमेशा रहने वाला पहले से वगैरह हो।

नहीं। वे जो कर रहे हैं, वह खुद को एक स्ट्रक्चर्ड सेल्फ-कॉन्शसनेस के तौर पर समझने की कोशिश कर रहे हैं। आप समझ रहे हैं? यही खुद का आइडिया है ।

वह क्या है जो अनुभव की सभी विविधताओं को एकीकृत करता है ? स्वयं की एकीकृत क्रिया क्या है? आप इस आत्म-चेतना को कैसे चित्रित करने जा रहे हैं? और जैसा कि आप बोर्ड पर मैंने जो लिखा है उससे देखते हैं, यदि आत्म-चेतना वास्तविकता की कुंजी है, और सवाल यह है कि, ठीक है, आत्म-चेतना की आवश्यक, केंद्रीय, मौलिक विशेषता क्या है, जिसका बाकी सब कुछ सिर्फ एक कार्य या उप-उत्पाद है, तो आपको चार अलग-अलग उत्तर मिलते हैं। फिचटे में, नैतिक चेतना व्यावहारिक कारण की आलोचना से निकलती है । शेलिंग में, यह वह है जिसे कांट टेलीलॉजिकल कहते हैं।

फैसले की आलोचना में, एस्थेटिक चेतना। शेलिंग जर्मन रोमैंटिसिज़्म के मुख्य दार्शनिक हैं। श्लेयरमाकर, फ्रेडरिक श्लेयरमाकर के लिए, यह धार्मिक चेतना है।

और श्लेयरमाकर 19वीं सदी के महान धर्मशास्त्री हैं, जिन्होंने अपने धर्मशास्त्र को धार्मिक अनुभव के एक प्रोजेक्शन के तौर पर बनाया। अगर आपको पसंद है, तो धर्मशास्त्र में रोमैंटिसिज़्म। वह एक रोमैंटिसिस्ट धर्मशास्त्री हैं।

और हेगेल बस यह कहते हैं, नहीं, यह हमारी कॉन्सेप्चुअल कैपेसिटी है। खुद होने के कॉन्सेप्ट को समझने की लगातार कोशिश। यही डेवलप हो रही कॉन्शसनेस की पहचान है।

अपने 'मैं' के कॉन्सेप्ट को और ज़्यादा पूरी तरह समझने की कोशिश में , मैं खुद होने के कॉन्सेप्ट को, पूरी चीज़ को और ज़्यादा पूरी तरह समझ रहा हूँ। तो आपको फाइनाइट 'मैं' और 'एब्सोल्यूट' के बीच फर्क करना होगा । 'एब्सोल्यूट' का मतलब है होने का एक सबको शामिल करने वाला आधार।

और यहीं से 'ग्राउंड ऑफ़ बीइंग' शब्द का इस्तेमाल शुरू होता है। आप इसे श्लेयरमाकर, हेगेल, वगैरह में पाते हैं । ठीक है, अब, मैं एक सवाल, एक कमेंट के लिए यहीं रुकता हूँ।

क्रिस्टन? ओह, आपने तैयारी करते समय मेरे सवाल का जवाब दे दिया। मुझे लगा कि शायद मैं दे दूँ, इसलिए मैं पूछता रहा। क्या इन सबका मुख्य बिंदु, या मुझे लगता है कि इन सभी आदर्शवादियों का एक मुख्य बिंदु यह है कि खुद के अंदर किसी तरह की एकता है ? हाँ, हाँ।

हाँ, यहाँ ज़ोर खुद की एकता पर है। और तुरंत, आपको एक एकजुट, सबको शामिल करने वाला, एक परम आत्मा मिल जाती है। तो यहाँ आपको एक मोनिस्टिक आइडियलिज़्म, एक मोनिस्टिक मेटाफ़िज़िक मिलता है, सब कुछ आखिरकार एक है।

इस इमेज में बनाया गया है। ठीक है, खुद की एकता। यह इससे कैसे अलग है ? आप पैन्थेइस्टिक के बजाय मोनिस्टिक क्यों कहते हैं? खैर, मोनिज़्म शब्द का सीधा मतलब है कि असलियत एक सबको शामिल करने वाली चीज़ है।

पैन्थीइज़्म वह धार्मिक रूप है जो एक को भगवान के रूप में पहचानता है। अब, आपको पैन्थीइज़्म शब्द इन लोगों के लिए थोड़ा ज़्यादा भारी लग सकता है। खासकर हेगेल के लिए, जो पैन्थीइज़्म से खुश नहीं हैं।

लेकिन पैनएंथिज्म शब्द शायद ज़्यादा सही है। अब फ़र्क छोटे ग्रीक प्रीपोज़िशन एन का है, जिसका मतलब है 'इन'। इसलिए यह कहने के बजाय कि सब कुछ भगवान है और भगवान ही सब कुछ है, सब कुछ भगवान में है।

लेकिन सीमित चीज़ों की कुल मिलाकर ईश्वर की कुल मिलाकर बात खत्म नहीं होती। और भी प्रोसेस की गुंजाइश है। स्पिनोज़ा के पैन्थीइज़्म में एक स्थिर दुनिया है।

इसमें मैकेनिस्टिक स्टैटिक ऑर्डर है। यह एक डायनामिक, ओपन-एंडेड टेलियोलॉजिकल प्रोसेस है। डेविड? नहीं, नहीं, इसे फिर से कहो।

मुझे पक्का नहीं पता कि मुझे सवाल समझ आया। हाँ, हाँ। जब जर्मन आइडियलिस्ट की बात आती है, तो वे खुद को एक स्ट्रक्चर्ड सेल्फ-कॉन्शसनेस के तौर पर समझने की कोशिश कर रहे हैं।

हाँ, कांट में, खुद की एकता, जो यह चीज़ है, ठीक है। कांट में, खुद की एकता सिर्फ़ रूपों और कैटेगरी की लिस्ट बनाकर नहीं मिलती। बल्कि यह उस चीज़ के हिसाब से मिलती है जिसे वह सिंथेटिक एकता कहते हैं।

परसेप्शन की सिंथेटिक यूनिटी शब्द पर ध्यान दें। आप देखेंगे। और फिर समय के रूप के संबंध में बारह कैटेगरी का स्कीमेटाइज़ेशन।

अब, दोनों मामलों में ध्यान दें, सिंथेटिक यूनिटी और स्कीमेटाइज़ेशन दोनों में, यह एक फंक्शनल यूनिटी है। खुद एक्शन में एक है। सिर्फ़ होने में नहीं, बल्कि सोचने में, अनुभव करने में।

इसीलिए मैं सेल्फ-कॉन्शसनेस कहता हूँ। आप देखेंगे। और मुझे लगता है कि यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि यह एक फंक्शनल यूनिटी है, हम फंक्शनली यूनिफाइड हैं।

सेल्फ -कॉन्शसनेस में जोड़ने वाला फैक्टर क्या है ? खैर, यह फंक्शनल यूनिटी है। ये फंक्शनल यूनिट्स हैं। आप देखेंगे।

ये वो काम हैं जो एक करते हैं। किसी खास फिलॉसफर के लिए अलग-अलग। जॉन लॉक और पर्सनल आइडेंटिटी पर उनकी चर्चा पर दोबारा सोचें ।

एक समय के दौरान खुद को एक करने वाली चीज़ क्या है ? और उनका जवाब है बस याददाश्त। यानी, पिछले अनुभव जो मेरे अभी के अनुभव से जुड़े हैं, मेरे पास्ट की अभी की याददाश्त।

आप देखेंगे। तो वह भी एक तरह की फंक्शनल यूनिटी है। और यह कुछ हद तक अंदाज़ा लगाने वाली बात है कि वह, कि क्या कोई अंदरूनी आत्मा है , वह ऐसा सोचता है लेकिन इसे उतनी साफ़ तरह से साबित नहीं कर पाता जितना डेसकार्टेस ने सोचा था।

आप देखेंगे। तो मुझे लगता है कि फंक्शनल यूनिटी का यह आइडिया ज़रूरी है। ठीक है, और कुछ है? तो मैं इसे शॉर्ट में बताता हूँ।

हम जो खोजने जा रहे हैं, जो हम खोजने जा रहे हैं, वह सबसे पहले एक नया साइंटिफिक मॉडल है, जो ज़्यादा ऑर्गेनिक और डेवलपमेंटल है। अगर आपको इवोल्यूशनरी थ्योरी पसंद है, तो बेशक, इवोल्यूशनरी थ्योरी डेवलपमेंटल बायोलॉजी के साथ आई थी। डेवलपमेंटल बायोलॉजी माइक्रो और मैक्रो दोनों लेवल पर थी।

माइक्रो लेवल पर, जेनेटिक्स की शुरुआत , मैक्रो लेवल इवोल्यूशनरी बायोलॉजी है। लेकिन एक नया साइंटिफिक मॉडल, डेवलपमेंटल। एक नया फिलॉसॉफिकल तरीका।

यह ट्रांसेंडेंटल मेथड से शुरू होता है लेकिन इसे फेनोमेनोलॉजिकल मेथड कहा जाता है। फेनोमेनोलॉजी, यही मेथड है। हेगेल के मुख्य काम का टाइटल क्या है? द फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ माइंड।

मन की फेनोमेनोलॉजी। और 20वीं सदी में यूरोप की सबसे अहम फिलॉसफी क्या है? यह फेनोमेनोलॉजी है, एक मेथड वाला तरीका। यह एग्जिस्टेंशियलिज़्म, हर्मेन्यूटिकल थ्योरी , वगैरह के पीछे का तरीका है।

अब इस शब्द फेनोमेनोलॉजी को देखिए। यह फेनोमेनलिज़्म जैसा नहीं है। और एक पल सोचने पर आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि आप में से कुछ लोग जो इन शब्दों का एक-दूसरे की जगह इस्तेमाल कर रहे थे, वे क्यों नहीं सोच रहे थे।

ism और logy में फ़र्क होता है। ism एक सोच है, एक थ्योरी है। Phenomenalism वह नज़रिया है कि हम जो कुछ भी जानते हैं वह सिर्फ़ दिखावा है।

लॉजी एक स्टडी है, एक साइंस है, एक मेथड वाली चीज़ है। अब, फेनोमेनोलॉजी, तो फेनोमेनोलोजी की स्टडी है। यह नहीं कह रहा कि सिर्फ़ फेनोमेनोलोजी को ही जाना जा सकता है।

लेकिन यह कह रहा है कि हम घटनाओं की स्टडी से शुरू करते हैं। फ़र्क समझे? हाँ, क्योंकि अगर आप खुद के स्ट्रक्चर को समझने की कोशिश कर रहे हैं, तो वह क्या है जो कॉन्शसनेस और सेल्फ़-कॉन्शसनेस के डेवलपमेंट में होता है? खैर, आपको प्रोसेस बताना होगा , है ना? आपको कॉन्शसनेस डेवलप होने की घटनाओं को बताना होगा । तो यह तरीका फेनोमेनोलॉजिकल है।

खैर, अब 20वीं सदी में, यह शब्द काफी आम है । और भले ही आपको कुछ ऐसे लोग मिलें जो इस शब्द का इस्तेमाल फेनोमेनोलॉजी की जगह फेनोमेनोलॉजी के तौर पर करते हैं, लेकिन दोनों बहुत, बहुत अलग हैं। आपको इसका सही इस्तेमाल फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ रिलिजन जैसे फ्रेज़ में मिलता है।

जिसका इस्तेमाल दो मतलब में किया जाता है। एक है धार्मिक अनुभव की फेनोमेनोलॉजी, जो धार्मिक अनुभव की घटनाओं को बताता है। दूसरा है धर्म की फेनोमेनोलॉजी जो विश्वासों और प्रथाओं को बताता है।

उस सोशल लेवल, कल्ट लेवल पर घटनाएं। फेनोमेनोलॉजी। यह एक डिस्क्रिप्टिव तरीका है।

यह किसी चीज़ को डेमोंस्ट्रेटिव आर्गुमेंट्स से साबित करने की कोशिश नहीं है। डेसकार्टेस के पुराने डेमोंस्ट्रेटिव आर्गुमेंट्स ट्रेडिशन को लॉक करते हैं, नहीं, वह बीती बात है। वह डोगमैटिक मेटाफ़िज़िक्स का हिस्सा था।

आपके पास एक डिस्क्रिप्टिव तरीका है। और एक असरदार डिस्क्रिप्शन का नतीजा, इसलिए, ऐसा-वैसा नहीं होता, QED। एक असरदार डिस्क्रिप्शन का नतीजा है, "ओह, मैं समझ गया, हाँ, ऐसा ही है।"

आप समझे? क्योंकि आप अपने डिस्क्रिप्शन से किसी से कह रहे हैं, अरे आओ और इसे देखो। देखो मैं क्या देख रहा हूँ। आप समझे? और डिस्क्रिप्शन की वैलिडिटी तब और बढ़ जाती है जब आप उस सहमति वाले सोशल प्रोसेस को देखते हैं।

आप समझे? असल में जो सही तरीके से बताया जा रहा है, उसके बारे में आपसी सहमति। तो यह एक बताने वाला तरीका है, दिखाने वाला तरीका नहीं। तो जब आप हेगेल को पढ़ें, तो खुद से यह न कहें कि उन्होंने क्या साबित किया है? मालिक और नौकर के बारे में यह क्या है? क्या उन्होंने कुछ साबित किया है? वह कुछ साबित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं।

वह बस उन आपसी रिश्तों को बताने की कोशिश कर रहे हैं जिनकी वजह से मालिक को खुद को मालिक के तौर पर जानने का एहसास होता है। और नौकर को खुद को नौकर के तौर पर जानने का एहसास होता है। आप समझे? बढ़ती हुई खुद की समझ और खुद के बारे में सोचने के बारे में बताया गया है।

लेकिन वह पूरी चीज़ की सिर्फ़ एक शैडो इमेज है, या पूरी चीज़ उसकी एक शैडो इमेज है। आप समझ रहे हैं? माइक्रोकॉस्म, मैक्रोकॉस्म। मैं एक और फुटनोट के साथ यहीं रुकना चाहता हूँ जो मुझे याद आ रहा है।

मैंने इस बारे में पहले खास तौर पर नहीं सोचा था। पिछली पतझड़ में, जब हमने प्री-सोक्रेटिक्स के बारे में बात शुरू की थी, तो मैं यह बताने की कोशिश कर रहा था कि फिलॉसफी की शुरुआत से भी पहले, ग्रीक कवियों, होमर, हेसियड, वगैरह में, एक व्यवस्थित एकता का विचार है, जैसे कि किसी व्यक्ति के नैतिक जीवन का क्रम एक शहर-राज्य के व्यवस्थित न्याय का एक छोटा रूप है, जो ब्रह्मांड की व्यवस्थित एकता का एक छोटा रूप है। याद है? तो खुद, नैतिक रूप से व्यवस्थित, एक अधिकार, एक न्यायप्रिय व्यक्ति, एक व्यवस्थित ब्रह्मांड का एक छोटा रूप है।

अब, ध्यान दें कि इस मोड़ पर बदलाव कितना बड़ा है। एक तरह से, यह उसी थीम पर वापस आ रहा है। आप समझे? खुद की व्यवस्थित एकता, पूरी सच्चाई की व्यवस्थित एकता का एक छोटा रूप है ।

आप समझे? लेकिन ग्रीक फिलॉसफर के लिए, इसे फिजिकल यूनिवर्स की एक जैसी एकता के तौर पर डेवलप किया गया था। ओह! अब यह आइडिया की दुनिया, कल्चर, आर्ट, धर्म की दुनिया के एक जैसे यूनिवर्स के तौर पर है। लेकिन खुद को पूरी चीज़ का एक छोटा रूप मानने का आइडिया अभी भी यहाँ है।

तो हैरान मत होइए अगर, हेगेल में, हेगेल के बारे में पढ़ते हुए, आपको लोगोस का आइडिया मिले। समझे ? क्योंकि हेगेल ने अपनी धार्मिक रचनाओं में, लोगोस के कॉन्सेप्ट को फिर से पेश किया, जो मशीनी ज़माने में खत्म हो गया था, जिसमें कोई मकसद नहीं था। ठीक है।

ठीक है। तो मैंने क्या कहा? एक नया साइंटिफिक मॉडल, एक नया फिलॉसॉफिकल तरीका, फेनोमेनोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन। ठीक है।

एक नया लॉजिक। एक नया लॉजिक। क्योंकि हमारे पास जो है वह सिलोगिज्म का लॉजिक है ।

सिलोजिस्टिक लॉजिक। हमें जो मिलने वाला है वह प्रोसेस का लॉजिक है । और प्रोसेस का वह लॉजिक डायलेक्टिक है।

सिलोजिस्टिक लॉजिक, न बदलने वाले यूनिवर्सल का लॉजिक है। क्यों? खैर, आप सिंपल कैटेगरिकल सिलोजिज्म का बेसिक नियम जानते हैं । सभी A, B हैं। सभी B, C हैं। इसलिए, सभी A, C हैं। आप देखिए, सिलोजिज्म का बेसिक नियम यह है कि एक मिडिल टर्म होता है।

और बीच का टर्म कम से कम एक बार यूनिवर्सली बढ़ाया जाना चाहिए। कहने का मतलब है, B यूनिवर्सल होना चाहिए, सभी B, कम से कम एक बार, ताकि B, यह B, यह खास B , इसका हिस्सा बन सके। नहीं तो, कोई कनेक्शन नहीं है।

आपके पास एक कनेक्टिव होना चाहिए। कनेक्टिव एक यूनिवर्सल के बारे में होना चाहिए । अब, बेशक, यह लोगों के एक यूनिवर्सल क्लास के बारे में हो सकता है।

लेकिन यह एक ऐसे लोगों का ग्रुप होना चाहिए जो किसी खास मामले में न बदले । दूसरे शब्दों में, आपके पास किसी तरह के न बदलने वाले यूनिवर्सल होने चाहिए। कम से कम, न बदलने वाले यूनिवर्सल कॉन्सेप्ट तो होने ही चाहिए।

तो, यह लॉजिक बनाया गया था, इसे बनाया गया था, इसे ऑर्गनाइज़ किया गया था, डेवलप किया गया था, अरस्तू ने, आप देखिए, यूनिवर्सल्स पर ज़ोर देते हुए। न बदलने वाले यूनिवर्सल कॉन्सेप्ट्स। क्लासेस, स्पीशीज़।

ओह, लेकिन अब, अगर हमारे पास साइंस और हिस्ट्री में डेवलपमेंट का कॉन्सेप्ट है, तो आप देखिए, डेवलपमेंट प्रोसेस में क्या हो रहा है, इसके बारे में आप कैसे सोचेंगे? ज़ाहिर है, इससे यह सवाल उठेगा कि क्या कोई यूनिवर्सल्स हैं? और हेगेल को यूनिवर्सल्स की पूरी थ्योरी को रीस्ट्रक्चर करना होगा। वह इसे छोड़ता नहीं है, वह इसे रीस्ट्रक्चर करता है। और वह अरस्तू के काफी करीब है।

लेकिन इसे रीस्ट्रक्चर करने में, उन्हें अभी भी परमानेंस के लॉजिक के बजाय प्रोसेस के लॉजिक के साथ काम करना होगा । प्री-सोक्रेटिक्स के बारे में सोचें। जहाँ हेराक्लिटस और पारमेनाइड्स के बीच का एंटीथीसिस यूनिवर्सल चेंज और यूनिवर्सल परमानेंस के बीच का एंटीथीसिस है।

खैर, अब हम इस बात पर आ रहे हैं कि बदलाव, परमानेंस से ज़्यादा अल्टीमेट है। बदलाव, परमानेंस से ज़्यादा अल्टीमेट है। जब हम हेगेल पर पहुँचेंगे, तो मैं उनके लॉजिक के बारे में कुछ कमेंट्स करूँगा।

कभी-कभी, जिन लोगों ने हेगेल का लॉजिक नहीं पढ़ा है, वे कहते हैं कि वह नॉन-कॉन्ट्राडिक्शन के नियम को खारिज करते हैं। वह ऐसा नहीं करते। साफ तौर पर, वह ऐसा नहीं करते।

वह इसे बदलाव की दुनिया में मामूली बात मानते हैं। आप कभी भी एक ही नदी में दो बार कदम नहीं रखते, और इसलिए आपको एक ही समय में और एक ही मामले में नॉन-कॉन्ट्राडिक्शन के नियम से परेशानी होती है। तो, प्रोसेस का लॉजिक, डायलेक्टिक।

और डायलेक्टिक, आपको याद होगा, एक ऐसी सोच है जो कहती है, हाँ, नहीं, और फिर दोनों को एक सिंथेसिस में एक साथ लाती है। थीसिस, एंटीथीसिस, सिंथेसिस। हाँ, नहीं, खैर, यह रहा।

और प्रॉब्लम इसे समझने की है। आइडिया यह है कि सोचने का प्रोसेस, जो शुरुआती पॉइंट है, सोचने का प्रोसेस दिमागी उलझन जैसा है, आइडियाज़ की पूरी भूलभुलैया से अपना रास्ता ढूंढना। यह नहीं, लेकिन यह, वह थोड़ा और आगे है, लेकिन हाँ, हमें इसकी और इसकी ज़रूरत है।

एक दिमागी उलझन जो पूरी और पूरी समझ की ओर ले जाती है। यह एक उभरता हुआ कॉन्सेप्ट है। और इतिहास पर लागू होने पर, यही नज़रिया है, कि इतिहास में पेंडुलम के झूलने की आदत होती है।

हम अभी पुराने सोवियत यूनियन में कंजर्वेटिव रिएक्शन देख रहे हैं, और फिर उसमें बदलाव होगा। तो, एक डायलेक्टिकल प्रोसेस। एक नया लॉजिक।

इसलिए, एक नई एपिस्टेमोलॉजी भी। एक नई एपिस्टेमोलॉजी। 17वीं सदी, 18वीं सदी में हमारे पास जो था, वह ज्ञान की एक रिप्रेजेंटेशनल थ्योरी थी।

रिप्रेजेंटेशनल। ऐसे आइडिया जो सब्जेक्टिव होते हैं, जो दिखाते हैं, ओह, लेकिन इन जर्मन आइडियलिस्ट लोगों के लिए, आइडिया अब रिप्रेजेंटेशन नहीं रह जाते, मन में रुके हुए रिप्रेजेंटेशन नहीं रह जाते। आइडिया उस दुनिया के साथ डायनामिक इंटरैक्शन में पैदा होते हैं जिसका हम हिस्सा हैं, बड़ी दुनिया के साथ।

और इसलिए, आपके पास एक एपिस्टेमोलॉजी है जो डायरेक्ट अवेयरनेस पर ज़ोर देती है। जिसके अंदर आइडियाज़ का धीरे-धीरे क्लियर होना, कॉन्सेप्ट्स का क्लियर होना होता है। डायरेक्ट अवेयरनेस, धीरे-धीरे क्लियर होना।

जब हम हेगेल तक पहुँचेंगे तो हम इसे और साफ़ तौर पर देखेंगे। और नया मेटाफ़िज़िक, खैर, हम इसी के बारे में बात कर रहे थे। आप नए मेटाफ़िज़िक को कैसे बताएँगे? यह मैटेरियलिज़्म के बजाय आइडियलिज़्म है, डुअलिज़्म के बजाय।

यह आइडियलिज़्म है। सब कुछ मन, आत्मा और खुद के नेचर का है। अगर आप चाहें तो यह एक तरह का डेवलपमेंटल मोनिज़्म है।

आप इसे इवोल्यूशनरी आइडियलिज़्म कह सकते हैं। सभी इवोल्यूशनरी सोच नेचुरलिस्टिक नहीं होती। ये इवोल्यूशनरी आइडियलिस्ट थे।

सब कुछ उस आध्यात्मिक जीवन और जोश के पूरी तरह से असलियत की ओर बढ़ रहा है जो बाकी सब चीज़ों के पीछे है। यह छिपा हुआ है। यह बाहर आ रहा है।

इवोल्यूशनरी आइडियलिज़्म। इसे कभी-कभी इमैनेंटिस्टिक भी कहा जाता है। इसमें कोई भी दिव्य सत्ता, होने का पक्का आधार, पूरी तरह से आसन्न है ।

इसके गहरे धार्मिक नतीजे हैं। इसका मतलब है कि कोई ऐसा भगवान नहीं है जो खुद को उन जीवों के सामने प्रकट करे जो उससे बाहर हैं। इसलिए स्पेशल रेवेलेशन जैसी कोई चीज़ नहीं है।

क्योंकि अगर दिव्यता पास है, तो दिव्य आत्म-चेतना आपकी आत्म-चेतना में उमड़ती है। इसलिए कोई खास रहस्योद्घाटन, रहस्योद्घाटन के कार्य जैसी कोई चीज़ नहीं है। एक्स निहिलो क्रिएशन जैसी कोई चीज़ नहीं है।

मुक्ति का कोई ऐतिहासिक काम नहीं होता। यह सब अंदर से होने वाला प्रोसेस है, जो होने वाला है। कोई अनोखा अवतार नहीं होता।

अगर कोई ईश्वर खुद अवतार नहीं लेता तो यह कैसे हो सकता है? अवतार तो बस हर चीज़ में ईश्वर के होने की बात करने का एक प्रतीक है। इसलिए जब हम हेगेल के धर्म के दर्शन पर आते हैं तो इस पर ध्यान दें। इमिनेंटिज़्म।

मेटाफ़िज़िक को कभी-कभी ग्रेजुअलिज़्म कहा जाता है। कहने का मतलब है, अस्तित्व में हर चीज़ कुछ हद तक मन, आत्मा , चेतना है । आप देखिए, हर चीज़ के होने की डिग्री का पुराना विचार, अब एक डेवलपमेंटल प्रोसेस में बदल गया है।

इवोल्यूशन का प्रोसेस एक धीरे-धीरे होने वाले प्रोसेस में ज़्यादा से ज़्यादा डिग्री का डेवलपमेंट है। मन, आत्मा की ज़्यादा से ज़्यादा डिग्री। यह इवोल्यूशनरी ऑप्टिमिज़्म का हिस्सा है।

और हेगेल के लिए, आत्मा का सबसे पूरा रूप जर्मन संस्कृति में सामने आता है। आप और कहाँ उम्मीद करेंगे? हाँ, यह राष्ट्रवाद का ज़माना था। क्यों? क्योंकि राष्ट्रवाद क्या है? यह लोगों की आत्मा की पहचान का मूर्त रूप, पूरी तरह से खुद को खोजना, खुद को महसूस करना है।

नेशनलिज़्म रोमैंटिसिज़्म का प्रोडक्ट है। इस जर्मन आइडियलिज़्म का प्रोडक्ट। और फिर मैं कहने वाला था कि यह रोमैंटिसिज़्म है।

खैर, मुझे लगता है कि आप यह पहले से ही देख रहे हैं। जब वर्ड्सवर्थ डैफोडिल्स के लिए एक कविता गाते हैं, और आपका दिल डैफोडिल्स के साथ नाचता है, तो यह सिर्फ़ एक उदाहरण नहीं है, आप देखिए। डैफोडिल का नाच वहाँ काम कर रही एक खास तरह की क्रिएटिव भावना का एक आज़ाद, क्रिएटिव रूप है जो आपके दिल में और भी ज़्यादा पूरी तरह से काम कर रही है।

और इसलिए आपका दिल, स्टिमुलस पर रिस्पॉन्ड करते हुए, डांस के एक बड़े कोरस में शामिल हो जाता है। रोमैंटिसिज़्म। खैर, जर्मन आइडियलिज़्म के साथ हम यहीं जा रहे हैं।

अब, मैं इन दूसरे आंकड़ों के बारे में एक-दो कमेंट करना चाहता हूँ। कोई सवाल? क्या आप समझ गए कि मैं क्या दिखाने की कोशिश कर रहा हूँ? मुझे लगता है कि अगर आप इसे और मेरे इस्तेमाल किए जाने वाले दूसरे इलस्ट्रेशन को समझ गए, तो आपको हेगेल के जो छोटे-छोटे हिस्से हमारे पास हैं, उन्हें पढ़ना समझ में आएगा। लेकिन पहले स्टम्पफ को पढ़िए।

वह आपको ज़्यादातर ओवर-पिक्चर देगा, हालांकि वह आपको लगभग एक मरी हुई ओवर-पिक्चर देता है, जैसे कि यह कोई डेवलपमेंटल प्रोसेस न होकर एक लॉजिकल सिस्टम हो। मुझे लगता है कि जो चीज़ इसे सबसे अच्छे से करती है, वह है, एक छोटे से दायरे में, हालांकि मैं हमारे एक ग्रेजुएट, मेरिल वेस्टफॉल, WESTPHAL की हेगेल पर लिखी किताब का भी शुक्रगुजार हूं, जो ब्रोंक्स में फोर्डहम यूनिवर्सिटी में पढ़ाती हैं। और एक फर्स्ट-रेट हेगेल स्कॉलर हैं।

वह हेगेल सोसाइटी ऑफ अमेरिका के प्रेसिडेंट रहे हैं। लेकिन उनकी किताब इसे समझने में बहुत, बहुत मददगार है। ठीक है।

जैसा कि मैं कह रहा था, खुद को जोड़ने वाली सोच, वह कौन सा काम है जो सबसे अहम जोड़ने वाला काम है, खुद को पूरी तरह से अपने में समा लेने वाला काम है? फिचटे, जिनकी मौत 1814 में हुई थी, और इत्तेफाक से नेपोलियन के रूप से बहुत प्रभावित थे, वह सफेद घोड़े पर सवार, यूरोप में मार्च करता हुआ। यह रोमांटिक रूप बहुत कुछ दिखाता है। फिचटे यह सवाल उठाते हैं कि वह कौन सी ज़मीन है जो हमारे सभी अनुभवों के पीछे है। कांटियन शब्द का इस्तेमाल करें तो, वह कौन सी शर्त है जो इंसानी अनुभव को मुमकिन बनाती है, जो हमारी चेतना को वैसा बनाती है जैसा वह है? अब यह अच्छा कांटियन सवाल है।

वह कांट की तरह ही कट्टर मेटाफ़िज़िक्स को नकारते हैं। वह कांट की तरह ही एक ट्रांसेंडेंटल तरीका चुनते हैं। और जब वह खुद के अनुभव के बारे में बताते हैं, तो उन्हें पता चलता है कि खुद का नेचर एक नैतिक प्राणी के रूप में साफ़ तौर पर सामने आता है, जहाँ इच्छाशक्ति सबसे अहम और सबसे ज़्यादा बताने वाली काबिलियत होती है।

अब, दिलचस्प बात यह है कि उनका फेनोमेनोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन जो उस ओर ले जाता है, वह एपिस्टेमोलॉजिकल साइड का ज़्यादा डिस्क्रिप्शन है। उदाहरण के लिए, वह डेसकार्टेस का पुराना सवाल पूछते हैं: मुझे कैसे पता चलेगा कि मैटेरियल बॉडीज़ मौजूद हैं? यह एक पुराना सवाल है। बर्कले इसके लिए खुश होते।

आपको कैसे पता कि मैटेरियल बॉडीज़ होती हैं? और उनका शुरुआती जवाब, बेशक, बर्कले और ह्यू जैसे लोगों से होने वाले शक का ब्यौरा है। मुझे नहीं पता कि फिजिकल बॉडीज़ होती हैं। लेकिन मेरे नैतिक संघर्ष में, ड्यूटी और इच्छा के बीच मेरे अंदरूनी नैतिक संघर्ष में, ड्यूटी के हिसाब से काम करने और अपने आस-पास की दुनिया में बस अपनी पसंद के हिसाब से चलने के बीच, मुझे लगता है कि मेरी नैतिक ज़िंदगी यह मानती है, फिर से वही शब्द है, हमारे पास यह कांट में था, यह एक नॉन-सेल्फ के होने को मानती है जो सेल्फ की नैतिक ज़िंदगी के खिलाफ है।

तो यह नैतिक जीवन में है जहाँ हमें नैतिक इच्छा का उल्टा मिलता है । नैतिक इच्छा का उल्टा वह है जो, आप देखिए, इच्छा से ही बताया जाता है, जैसा कि यह था। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि कोई फिजिकल नॉन-सेल्फ दुनिया मौजूद है।

लेकिन उस नॉन-सेल्फ में जो कुछ भी है, वह सेल्फ के एक तरह के डायलेक्टिकल विरोध में खड़ा है। जैसा कि हम नैतिक जीवन में जानते हैं, है ना? तो फिर, अगर हम असलियत के नेचर के बारे में बात करने जा रहे हैं, तो वह क्या होगा? यानी, अगर सेल्फ -कॉन्शसनेस ही असलियत की चाबी है, और यह लेंस मुझे पूरी स्क्रीन पर असलियत की तस्वीर दिखाने की इजाज़त देता है , मैं असलियत के नेचर के बारे में क्या कहूँगा? खैर, ज़ाहिर है , असलियत में, खुद का कोई उल्टा नहीं है। आप इसे 'a' और ' non-a' दोनों तरह से नहीं पा सकते ।

और जो दिखाया जाता है, वही ईगो के रूप में सामने आता है। एब्सोल्यूट ईगो, एब्सोल्यूट विल। यानी, रियलिटी। समग्र रूप में इसमें वह बात है जिसे हम संयोजक विशेषताएँ कहेंगे।

हाँ, अलग-अलग लेवल पर। इंसानों में, सोच-समझकर इच्छा होती है, नैतिक इच्छा होती है। जानवरों में, सहज इच्छा होती है।

पेड़-पौधों वाले जीवन में, चीज़ों का लगातार बढ़ने , बढ़ने, ज़िंदा रहने का ज़ोर। बेजान चीज़ें भी बाहरी ताकतों का विरोध करती हैं। इन सभी मामलों में, आप जो देखते हैं वह इच्छा का रूप है, या इच्छा का पहले से विकास है, जो खुद से अलग चीज़ के विरोध में है।

वह चट्टान जो टूटने से बचती है। वह पौधा जो मिट्टी से खुद को ऊपर उठाता है। जानवर में ज़िंदा रहने की अपनी स्वाभाविक इच्छा और लड़ाई होती है।

और इंसान, सिर्फ़ अपनी इच्छा के आगे झुकने के बजाय, अपने फ़र्ज़ के हिसाब से काम करने को तैयार रहता है। तो, उसकी सोच उसी तरह सामने आती है। और फिर वह इसे इस तरह से दिखाता है।

आपके पास जो है, जो असली सच्चाई है, वह है एब्सोल्यूट ईगो जो फाइनाइट ईगो और फाइनाइट नॉन-ईगो में दिखता है। अब, हम फिनॉमिनल दायरे में जो देखते हैं, वह इसका उलटा है। ईगो बनाम नॉन-ईगो।

तो फेनोमेनोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन इसे बताता है। हम इच्छा की कोशिश की असलियत जानते हैं। हम फिजिकल नॉन-ईगो की असलियत नहीं जानते।

चलिए इसे बस मान लेते हैं। और इसलिए इसे स्क्रीन पर दिखाते हुए, एब्सोल्यूट ईगो ही असलियत का नेचर है। खैर, इसे शेलिंग के साथ आज़माएँ।

रीज़न की आलोचना से ज़्यादा जजमेंट की आलोचना है । फ़ोकस प्रकृति के साथ एक होने की भावना पर है।

चल रहे टेलियोलॉजी का एहसास जिसका हमारा एस्थेटिक अनुभव एक हिस्सा है। वगैरह। ठीक है, तो शेलिंग नेचर की फिलॉसफी के बारे में एक इवोल्यूशनरी आइडियलिज्म के तौर पर लिखते हैं।

भौतिक दुनिया एक जीवित चेतन आत्मा के धीरे-धीरे विकास के शुरुआती चरण में है। और प्रकृति एक जीवित शक्ति है। आवेगी।

क्रिएटिव। नएपन से भरा हुआ। और जब वह मन की फिलॉसफी की ओर मुड़ता है, तो उसे इंसानी कल्चर में भी वैसी ही चीज़ दिखती है।

थ्योरेटिकल सोच में क्रिएटिविटी का लेवल कम है और नई चीज़ों की चाहत बढ़ रही है। सेंस परसेप्शन। थ्योरेटिकल नॉलेज ।

यह क्रिएटिव ड्राइव प्रैक्टिकल दायरे में ज़्यादा चल रही है। नैतिक और राजनीतिक, जैसा कि फिचटे ने कहा है। लेकिन इसका सबसे पूरा रूप एस्थेटिक दायरे में है।

जहां पहले लेवल का सोचने-समझने का तरीका, यानी समझ, दूसरे लेवल के एक्टिव पहलू, यानी नैतिक लेवल के साथ जुड़ता है। क्रिएटिव आर्ट में एक्शन और सोचने-समझने का मेल होता है। क्रिएटिव एनर्जी।

कल्पनाशील। अनुभव की नई दुनिया बनाना। और इसलिए वह इस तरह की चीज़ों को फेनोमेनोलॉजिकली देखते हैं और यह नतीजा निकालते हैं कि असलियत खुद कुल मिलाकर बहुत बड़ी, क्रिएटिव है, न कि क्रिएटिव इच्छा, क्रिएटिव ड्राइव।

इतिहास के दौरान भावना और परम सत्य के सामने आने पर ज़ोर। तो आप पाएंगे कि ये दोनों एक ही तरह के मेथड को बहुत हद तक फॉलो करते हैं। बहुत हद तक एक जैसे।

श्लेयरमाकर? वैसे, शेलिंग पहले जर्मनी में जेना, JENA में और फिर बर्लिन में रोमांटिकिस्ट सर्कल के मेंबर थे । बर्लिन में, उनके साथ श्लेयरमाकर भी थे, जो एक पिएटिस्ट बैकग्राउंड से पादरी थे, एक हॉस्पिटल चैपलेन थे, वगैरह। और उन्हें धार्मिक चेतना ही इसकी चाबी लगती है।

उन्हें कांट के धर्म को नैतिकता से थोड़ा ज़्यादा समझने पर एतराज़ है। क्योंकि धार्मिक अनुभव, जैसा कि कोई भी पादरी जानता है, सिर्फ़ नैतिक इच्छा से कहीं ज़्यादा है। नैतिक इच्छा।

धार्मिक अनुभव पूरी तरह से ईश्वर पर निर्भर होना है। और यही ईसाई धर्म की पवित्रता का सार है। यह ईश्वर पर पूरी तरह से निर्भर होने का एहसास है।

आया हूँ । लेकिन ऐसा होने के लिए, पूरी तरह से निर्भर होने के लिए, भगवान हमारे जैसे कोई और इंसान नहीं हैं। भगवान ट्रांसेंडेंट नहीं हैं।

ईश्वर खुद अस्तित्व है। सभी अस्तित्व का आधार। लेकिन वह नहीं चाहते कि इसका मतलब स्पिनोज़ा का पैन्थीइज़्म हो।

18वीं सदी की तरह, स्पिनोज़ा का भी लोगों के बारे में एक एटमिस्टिक नज़रिया था कि वे अलग-अलग होते हैं, एक-दूसरे से अलग-थलग। अलग-थलग। श्लेयरमाकर ज़्यादा रिलेशनल नज़रिया अपनाते हैं।

मैं बाहर से दूसरी चीज़ों से जुड़ा नहीं हूँ, बस मेरे अंदर से एक कंटिन्यूटी का चैनल गुज़रता है। बल्कि एक ऑर्गेनिक रिश्ता है। तब खुद को डिफाइन किया जाता है, मैं क्या हूँ, इस धार्मिक अनुभव में जो एक हो रहा है, वह रिश्तों का पूरा नेटवर्क है।

मैं यहाँ हूँ , मेरे माता-पिता के साथ जेनेटिक रिश्ते हैं। मेरे दोस्तों, साथियों, माहौल के साथ सोशल रिश्ते हैं। मेरे हर सोची जा सकने वाली चीज़ के साथ इमोशनल रिश्ते हैं, आप देखिए।

और इसका एक ही मूल है पूरी तरह से निर्भरता की भावना। ये वेक्टर जहाँ भी जाते हैं, वे निर्भरता दिखाते हैं । किसी न किसी तरह की निर्भरता।

इन सभी को एक साथ लाना, खुद होने पर पूरी तरह निर्भर है। और ये सीमित निर्भरताएँ पूरी चीज़ के सीमित पहलू हैं। इसलिए भगवान होने का सब कुछ शामिल करने वाला आधार है।

और उन्होंने जो करने की कोशिश की, वह था ईसाई धर्म से जुड़े धार्मिक कॉन्सेप्ट को इन शब्दों में बताने के लिए एक थियोलॉजी बनाना। और इसलिए, थियोलॉजी की भाषा किसी शाब्दिक अर्थ में लेने के बजाय सिंबॉलिक हो जाती है। अच्छा, क्या आप देख रहे हैं कि क्या हो रहा है? सेल्फ-कॉन्शसनेस की फंक्शनल यूनिटी का फेनोमेनोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन।

इस नतीजे के साथ कि हम खुद में जो खोजते हैं, वह पूरी चीज़ का बस एक छोटा रूप है, जिसे फिर असलियत के रूप में दिखाया जाता है। ठीक है। हम इसे वहीं से शुरू करेंगे और अगली बार जब हम खुद हेगेल के बारे में जानेंगे तो इसे थोड़ा फिर से चलाएंगे।